

भरम भाजो वचन जोई करी, निद्रा घेन मूको परहरी।  
श्री धामतणां धणी केहेवाए, ते आवी बेठा आपण मांहे॥२॥

इन वचनों को विचारकर अपने संशय मिटाओ और नींद के नशे (माया का नशा) को त्यागो। अपने धाम धनी हमारे बीच में बैठे हैं।

हवे सेवा कीजे अनेक विध करी, अने आपण काजे आव्या फरी।  
वली अवसर आव्यो छे हाथ, चेतन करी दीधो प्राणनाथ॥३॥

अब इन धाम धनी की हर तरह से सेवा करें, क्योंकि वह हमारे कारण ही दुबारा माया में तन धारण करके आए हैं। फिर से अवसर अपने हाथ आया है। अपने श्री प्राणनाथ हमको जगा रहे हैं।

ए ऊपर हवे सूं कहूं, श्री वालाजीना चरणज ग्रहूं।  
कर जोडी करूं विनती, अने अलगी न थाऊं चरण थकी॥४॥

इसके ऊपर अब क्या कहूं? सिवाय इसके कि वालाजी के चरणों को पकड़ लूं और हाथ जोड़कर विनती करूं कि हे धनी! अब इन चरणों से कभी भी अलग न रहूंगी।

॥ प्रकरण ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ ३३१ ॥

### जाटी भाषा में-प्रबोध

मूंजा अंध अभागी जीव जोर रे, तूं कीं सुतो हित।  
पर पर धणिए जगाइया, तोके घर न सूझे कित॥१॥

हे मेरे अन्धे अभागे जीव! तू यहां क्यों सोता है? ताकत लगाकर उठ। धनी ने तुझे तरह-तरह से जगाया फिर भी तुझे घर की सुध नहीं आई।

अगेनी तू कुरो केओ, जडे पिरी हल्या साणे।  
से अजां न उथिए अकरमी, भूंडा सुते हित केही सांगायसे॥२॥

आगे भी तूने क्या किया? जब प्रीतम अपने सामने चले गए। हे अकर्मि जीव! तू अभी तक नहीं उठता। हे पापी! तू यहां किस (सम्बन्ध) कारण से सोया पड़ा है?

पर पोतेजी न्हार तूं निखर, वलहो न डिसे अजां छेह।  
अवगुण न डिसे पांहिंजा, पिरी मेहेर करी वरी एह॥३॥

हे दुष्ट! तू अपनी तरफ देख। धनी की जुदाई तुझे अभी भी नहीं दिखती। तू अपने अवगुणों को नहीं देखता। धनी ने फिर से कृपा की है।

वभिरकां पिरी तो कारण, आया माया मंझ।  
को न सुजाणे सिपरी, न तां थींदिए डूरण डंझ॥४॥

दूसरी बार प्रीतम तुम्हारे वास्ते माया में आए हैं। तुम अपने प्रीतम की पहचान क्यों नहीं करते? नहीं पहचाना तो कठिन से कठिन दुःख होगा।

पांण पांहिंजो पस तूं, अंख उघाडे न्हार।  
खीर पाणी जी परख पधरी, हिन तारतम महें विचार॥५॥

तू स्वयं अपनी तरफ आंख खोलकर देख, तो जागृत बुद्धि (तारतम) के विचार से दूध-पानी की (माया-ब्रह्म) पहचान साफ है।

अगेनी अंखियूं फूटियूं, भूंडा हाणें तूं कींक सांगाए।  
ही जोगवाई हथ न रेहेंदी, पोय पर न थिंदिए कांए॥६॥

पहले भी तेरी आंखें फूटी रहीं। हे पापी! अब तो तू कुछ पहचान। यह तन, समय, सामग्री हाथ में नहीं रहने वाली। पीछे तेरा क्या हाल होगा? (बुरी हालत होगी)।

अगेतां अकरमी थेओ भूंडा, हांणे तूं पाण संभारा।  
पिगी पले पले तोके थका, भूंडा अजां न वरे तोके सार॥७॥

पहले भी तू कर्महीन हो गया था। अब तो तू अपने को संभाल। प्रीतम तरह-तरह से कहकर थक गए। हे पापी! तुझे अभी भी सुध नहीं आती।

वभिरकां पिरी तो कारण, हांणे आया माया मंझ।  
धाऊं पाइंदे पिरी वभिरकां, तोके थीअण आई संझ॥८॥

अब प्रीतम माया में तेरे लिए दूसरी बार आये हैं। दूसरी बार प्रीतम जोर-जोर से पुकार कर कह रहे हैं। तेरा समय समाप्त होने को आया है (तेरी समझ का समय हो गया है)।

अंग मरोडे न उथिए, पासे फजर पसी हींए मंझ।  
पोए कारी रात में कीं न सुझे, से तां डुखे संदानी डंझ॥९॥

यदि आलस्य छोड़कर 'अब भी सवेरा हो गया है' ऐसा हृदय में विचार कर नहीं उठता, तो पीछे अंधेरी रात में कुछ भी दिखाई नहीं देगा और हमेशा के लिए दुःख ही दुःख हो जाएगा।

तारतम तूतां न्हार विचारे, जा पिरी आंदो तो कारण।  
हेतरा भट बरंदे मथे, तोके अजां सा न वंजे घारण॥१०॥

हे जीव! प्रीतम तेरे लिए जो जागृत बुद्धि का ज्ञान (तारतम) लाए हैं, उसको विचारो और देखो। इतनी आग (ज्ञान की फटकार) तेरे माथे पर हुई फिर भी तू नींद (माया) को अभी तक नहीं छोड़ता।

॥ प्रकरण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ ३४१ ॥

मूंहजा जीव अभागी रे, हांणे तूं जिन चुके हिन वरे।  
तो के नी हिन अंधारे मंझां, ई वेओ कढंदो केर॥१॥

हे मेरे अभागे जीव! तू इस बार मत भूलना। तुझे इस माया के अंधेरे से इस तरह दूसरा कौन निकालेगा?

गुण तूं हिकडो न्हार संभारे, संदो सिपरियन।  
जाग तूं मूंजा जीव अभागी, को सुते सारूथी मन॥२॥

हे अभागे जीव! प्रीतम के एक भी गुण को तू देखे और पहचाने तो तू जाग जाएगा। मन में सुख समझ कर क्यों सो रहा है?

पेरो वेण तो केहा कढया, से कुरो मथियण मन मंझा।  
बुध मन तोहेजा बेही रेहेंदा, हांणें क्रोध कढंदे साहा॥३॥

पहले तूने क्या कहा था? तूने मन में क्या विचार किया है? तेरे मन और बुद्धि यहीं बैठे रह जाएंगे। अब धनी तुझ पर गुस्सा करके ले जाएंगे।